

वा अदः संलिले सुसंरब्धा अतिष्ठत । अत्रा वो नृप्यतामिव तीत्रो रणुरपा-
यत ॥ 72, 6. यदेदो पितो अजगन्विषस्व पर्वतानाम् । अत्रा चित्रो मधो पितो
ऽर्धं भूताय गम्याः ॥ 1, 187, 7. यदेदो देवा अमुरात्स्वयाये निरकुर्वत । तत्-
स्वमध्योषधे अपामागो अनायथाः ॥ AV. 4, 19, 4. यदेदो देवा अमृगच्छम्
wohin immer ich gehe 16, 7, 9. अमुनिवानूकाशेन यदद् इन्द्रः सारथिरिव भू-
त्वोदजयत् Ait. Br. 2, 25. RV. 8, 26, 17. AV. 12, 1, 15. यत्रोदो गायत्री सुपणो
भूवा सोममाकर्त्तदेतासो होत्राणामिन्द्र उक्थानि परिपुष्य होत्रे प्रदेदो
Ait. Br. 6, 14. तथैवादः सोमं राजानं यावभिरभिषुण्वत्येवैतडूलूल-
मुमलाभ्यां दषडपलाभ्यां कृविष्यन्मभिषुणोति Cat. Br. 1, 1, 4, 7. तदः सौ-
त्रामणीतिष्ठितस्यां तद्याध्यायते 6, 3, 7. (überhaupt im Cat. Br. oft zu-
rück auf einen schon behandelten, oder vorwärts auf einen noch zu
behandelnden Gegenstandweisend) अनुवपदूरोति तथयोदो अस्मान्ना वा
पुनरभ्याकारं तर्पत्येवमेवैतदेवताः पुनरभ्याकारं तर्पयति Ait. Br. 3, 5.

3. अदम् (von 1. अद्) adj. essend, verzehrend, im comp. रिशादम्; s. d.
अदस्प (denom. von 1. अदम्), अदस्पति P. 8, 2, 80, Sch.

अदातर (3. अ + दातर) adj. 1) nicht gebend: अदाननित्याच्चादातुः von
Einem, der immer nimmt, aber niemals giebt M. 11, 15. geizig, karg R.
1, 6, 8. 3, 37, 15. Vet. 31, 17. अदाता पुरुषस्त्यागी धनं संप्रज्य गच्छति ।
दातारं कृपां मन्ये मृतो ऽप्यर्थं न मुञ्चति ॥ ÇARNG. PADDH. im Bull. hist.-
phil. VIII, 132. Im ÇKDa. wird der erste Vers dieses Spruches mit der
Variante स्वधनं त्यज्य den प्राचीनाः zugeschrieben. — 2) keine Zahlung
leistend, nicht verpflichtet zu zahlen: प्रतिभू M. 8, 161. — 3) ein Mäd-
chen nicht verheirathend: काले ऽदाता पिता वाच्यः M. 9, 4.

1. अदान (3. अ + दान) n. das Nichtgeben: वशाया अदानाय AV. 12, 4,
51. Cat. Br. 4, 3, 4, 23. KĀTJ. Ça. 25, 1, 16. das Nichtzulegen von Gewicht
und zugleich das Nichtgeben PAÑĀT. II, 74, wo घटः für घटः zu lesen ist
und कर्कटी wie कर्कट das gekrümmte Ende des Wagebalkens bedeutet.

2. अदान (wie eben) adj. nicht spendend; keine Feuchtigkeit aus den
Schläfen ausspritzend (wie der Elephant zur Zeit der Brunst): सदा दा-
नपरिशीलः (mit demselben Doppelsinn) शस्त एव करीश्वरः । अदानः पीन-
गात्रश्च निन्यत एव गर्दभः । PAÑĀT. II, 73.

अदान्य (von 1. अदान) adj. nicht schenkend: अदान्यात्सौम्यान्मन्त्र्यमानः
AV. 2, 35, 3.

अदान्य (3. अ + दान्य) 1) adj. a) nicht zu täuschen, zuverlässig: गोपाः
RV. 1, 22, 1. पतिः 9, 26, 4. 75, 2. गुरुपतिः 10, 118, 6. पुरूता विशाम् 3, 11,
5. — b) untrüglich, unwandelbar, lauter: शोचिः RV. 10, 118, 7. उद्योतिः
8, 90, 12. केतवः 9, 70, 3. चत्वारिंते अमूर्याणि नामादान्यानि मरुषस्य स-
न्ति 10, 54, 4. VS. 7, 2. कृविः 17, 18. vom Soma RV. 9, 3, 2. 89, 2. SV. II,
3, 1, 10, 2. 5, 2, 6, 6. — c) unantastbar, unnahbar: इन्द्रं दिप्सन्ति दिप्सवो
ऽदान्यम् RV. 7, 104, 20. 1, 155, 1. 3, 26, 4. 4, 53, 4. 8, 50, 12. — 2) m. N.
eines Graha (s. d.), welcher KĀTJ. Ça. 7, 6, 28. 12, 5, 6. 13. und bei Ma-
ntr. zu VS. 8, 47, 48. beschrieben wird.

अदामन् (3. अ + दामन्) adj. gabenlos, arm, karg: मात्वादामान् अदाम-
न्मघानः RV. 6, 44, 12. वत्सानां न तत्तपस्त इन्द्र दामन्वतो अदामानः सुदा-
मन् 24, 4.

अदापाद (3. अ + दापाद) adj. f. आ nicht erberechtigt: पुमान्दापादो
ऽदापादा स्त्री Nir. 3, 4 (Einschiebung). अदापादबान्धवाः M. 9, 158. 160.
Vivāḍik. 147, 6. 11. 15. 19. u. s. w.

अदायिक (von 3. अ + दाय) adj. wozu keine Erben da sind: अदायिकं
राजगामि KĀTJ. in Mir. 212, 14.

अदायिन् (3. अ + दायिन्) adj. nicht gebend Nir. 6, 30.

1. अदार (3. अ + दार von दृ) m. Nichtverletzung, s. अदारसूत्.

2. अदार (3. अ + दार) adj. unbeweibt: वानराः R. 4, 18, 15.

अदारसूत् (1. अदार + सूत्) adj. ohne Verletzung vorübergehend (von
einem Unfalle, Geschosse, u. s. w.): अदारसूद्वतु देव सोम AV. 1, 20, 1.

अदाप्रु (3. अ + दाप्रु) adj. den Göttern nicht gebend, unfrohm: जघृन्वो
अदाप्रून् RV. 1, 174, 6.

अदाप्रुरि (3. अ + दाप्रुरि) adj. dass.: यस्तेरेवा अदाप्रुरिः प्रममर्षं मुचयि
RV. 8, 45, 15.

अदाग्रम् (3. अ + दाग्रम्) adj. dass.: वेदो अदाग्रुषाम् RV. 1, 81, 9. यः श-
स्त्रतो अदाग्रुषो गयस्य प्रयत्तासि सुधितराय वेदः 7, 19, 1. compar.: अदाग्रू-
ष्टस्य वेदः 8, 70, 7.

अदास (3. अ + दास) m. Nicht-Slave, freier Mann: अदासं दासजीवनं
सूते M. 10, 32. अदासो गच्छ मुक्ता ऽसि MBh. 3, 15797. = Draup. 9, 21.
(अदास ग०).

अदिक्का (von 3. अ + दिक्का) adj. keine Weltgegend für sich habend: ते
देवा अमुरात्स्वपत्न्यान्वात्त्यान्दिग्भ्यो ऽनुदत् ते ऽदिक्काः पराभवन् Cat. Br.
13, 8, 1, 5.

1. अदिति (3. अ + दिति von दा, ददाति) f. Besitzlosigkeit, Nichtshaben,
Elend: दितिं च रास्वादितिमुरुष्य RV. 4, 2, 11. पितो भित्ति वपुनानि वि-
द्वानामाविवांसुदितिमुरुष्येत् 1, 152, 6. आ वृष्यतामदितये इरेवाः 10,
87, 18.

2. अदिति (3. अ + दिति von दा, यति) 1) adj. a) ungebunden, frei:
आदित्यासो अदितयः स्याम RV. 7, 52, 1. — b) schrankenlos, unendlich;
die Schaar der Marut RV. 4, 3, 8. der Himmel 5, 59, 8. 10, 63, 3. be-
sonders häufig von Agni 1, 94, 15. 7, 9, 3. समिधा यो निश्चिती दाशदितिं
धामभिरस्य मर्त्यः 8, 19, 14. 12, 14. 10, 92, 14. विश्वेषामादितिर्यप्तिपांतां वि-
श्वेषामतिर्यिमानुषाणाम् 4, 1, 20. hier schwebt das Wort zwischen adj.
und subst. wegen des Wortspiels. — c) endlos, unerschöpflich: इरा-
द्योऽ अदितिं स्वेयंतो ऽचेतसो वि जग्भे पृक्षीम् RV. 7, 18, 8. मा गाम-
नागामादितिं वधिष्ठ 8, 90, 15. स पर्वभिर्भूषाः कल्पमानो गो मा हिंसीरदि-
तिं विराजन् VS. 13, 43. पीपायं धेनुरदितिर्भूताय जनाय मित्रावरुणा कृविर्दे
RV. 1, 153, 3; vgl. 2, b. — d) ganz (खण्ड) ÇANDAR. im ÇKDa. — 2) f.

a) Ungebundenheit, Freiheit, Sicherheit: को नो मूक्या अदितये पुनर्दात्पि-
तरं च दृशेयं मातरं च RV. 1, 24, 1. अनागसो अदितये स्याम 15. अनेको दा-
त्रमदितेरनर्वं कुवे स्वर्वदवधं नमस्वत् । तदेदसी जनयते जग्निरे 185, 3. आ
सर्वतातिमदितिं वृणीमहे 10, 100, 1. 5, 82, 6. AV. 7, 34, 1. — b) Unendlich-
keit, insbesondere die Schrankenlosigkeit des Himmels im Gegensatz zur
Endlichkeit der Erde und ihrer Räume: अतश्चत्ताश्च अदितिं दितिं च RV.
5, 62, 8. अदितिश्चैरदितिरत्तरिन्मदितिर्माता स पिता स पुत्रः 1, 89, 10.
(देवाः) ये स्थ जाता अदितेरन्वस्परि ये पृथिव्यास्ते मं इह मृता क्वम् 10,
63, 2. उर्वी गव्यूतिरदितेस्ते पते 9, 74, 3. 1, 166, 12. — c) der letzte Be-
griff personificirt ist die Göttin Aditi (Naiḥ. 8, 5.), die Mutter der
Āditja's, besonders häufig bezeichnet als Mutter Mitra's, Varuṇa's
und Arjama's, der vornehmsten unter ihnen; z. B. RV. 7, 60, 5. 8, 47,
9. In welchem Sinne sie AV. 8, 9, 21. अष्टपुत्रा genannt werden kann, da